International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# ''विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन''

**शोध निर्देशक**
डॉ. राम प्रताप सैनी
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/688

**रतनलाल सामोता**
पी–एच.डी. (एज्यूकेशन) (छात्र)
पंजीयन सं. 20119003
जे.जे.टी.विश्वविद्यालय,
चुड़ेला, झुंझुनू

**सहशोध निर्देशक**
डॉ. राजेन्द्र झाझड़िया
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/0571

**प्रस्तावना** –

भारतीय संस्कृति में शिक्षक को उच्च स्थान प्रदान किया गया है। शिक्षक वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालता है। शिक्षक ही बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी निपुणताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचरण हेतु धुरी का कार्य करता है और सभ्यता के दीपक को प्रदीप्त रखने में सहायक होता है। शिक्षक व्यक्ति का मार्गनिर्देशन ही नहीं करता वरन् वह राष्ट्र के भाग्य का भी मार्गनिर्देशन करता है। वस्तुतः शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान एवं पतन का भार है। शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व का विकास कर चहुंमुखी प्रतिभाओं को उजागर करता है।

जहां तक जीव के शरीर के भड़कने तथा उद्दीप्त होने की स्थिति का प्रश्न है, संवेग और प्रेरणा में कोई अन्तर नहीं है परन्तु दोनों के उत्पन्न होने की स्थिति को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त अंतर पाया जाता है।

संवेग भावों के अत्यन्त निकट है। जब भाव तथा अनुभूति की मात्रा बढ़ जाती है और शरीर में उद्दीप्त स्थिति का कारण बनती है तब उसे संवेग कहते हैं। इन्हीं संवेगों का विद्यार्थियों के जीवन में बड़ा महत्व है कि विद्यार्थी देश, धर्म तथा जाति की सुरक्षा के लिए बड़े से बड़े कार्य करने को तत्पर हो जाता है। ऐसी प्रेरणा उसे संवेगात्मक परिपक्वता से ही प्राप्त होती है। संवेग

की अवस्था में मनुष्य का शरीर क्रियाशील हो जाता है। अतः मनोवैज्ञानिकों ने सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं को ही संवेग कह कर पुकारा है।

**अध्ययन का महत्व :-**

विकास के दर्शन का बीजारोपण **''शिक्षा''** में निहित है। शिक्षा का स्वरूप व विस्तार निर्भर करता है **''शिक्षकों''** पर। शायद इसलिए शिक्षक अर्थात् गुरू को ईश्वर का दर्जा दिया गया है। आदर्श की प्रतिमूर्ति, दायित्व वहन का सच्चा दूत, मार्ग दर्शक एवं पथ प्रदर्शक न जाने कितने उच्च मानकों पर आधारित नामों से उसे जाना जाता है, उसे अपने आप में परिपूर्ण, रोल मॉडल, त्रुटि रहित, सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के निकट प्रतिनिधि के रूप में जन मानस में रखता है। जनमानस की यह धारणा है कि वह सत्य का प्रतीक, ज्ञान का भण्डार, समाज की आशाओं का उच्च पुरूष है, जिससे किसी प्रकार की कोई गलती नहीं होगी। उसकी प्रत्येक क्रिया सार्थकता व औचित्यपूर्ण समाजोपयोगी होगी। ऐसी छवि व धारणा के स्वामी अर्थात् शिक्षक से यदि कोई त्रुटि व गलती हो भी जाती है तो एक बार तो समाज उस पर कतई विश्वास नहीं करता अर्थात् शिक्षक की गरिमा व पद इतना उच्च होता है कि उससे ऊपर समाज ने किसी को भी स्थान नहीं दिया है। ऐसे में शिक्षक से जुड़े मुद्दों पर खोज करना, उनका अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक से जुड़ी हर क्रिया समाज के लिए लाभदायी होती है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है।

**अध्ययन का औचित्य :-**

पूर्व में हुए अध्ययनों के अतिरिक्त इस दिशा में अलग-अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं शिक्षकों के लिए फलदायी होगा, जिससे हम शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर में सुधार करने में संभव हो सकेंगे। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत

अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक राष्ट्र का दिशा निर्देशक एवं भविष्य का निर्माता होता है।

शोध अध्ययन से विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर पता लगने तथा पहचान होने पर अनेक शिक्षण–प्रशिक्षण प्रक्रिया के बाधक तत्वों का पता लग पाता है। इस निमित्त भावी शैक्षिक आयोजना में सुधार के नए आयाम स्थापित हो सकते हैं। साथ ही उक्त अध्ययन से वे सभी मनोसामाजिक एवं व्यवस्थायी कारकों की जानकारी होगी जिसके अध्ययन से संज्ञानित होकर शिक्षकों के व्यक्तित्व निर्माण के अनेक कार्य सिद्ध हो सकेंगे। उक्त अध्ययन मिशनरी, आदर्श विद्या मंदिर एवं नवोदय विद्यालयों के क्षेत्र में व्यापक सार्थकता रखता है। अतः शोधकर्ता ने निम्नलिखित शीर्षक पर कार्य करने का निर्णय लिया।

**समस्या कथन :–**

**''विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के आधार पर शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन''**

**अध्ययन के उद्देश्य :–**

1. मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–**

1. मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**अध्ययन का परिसीमन :–**

1. प्रस्तुत शोधकार्य राजस्थान के जयपुर संभाग तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल मिशनरी, आदर्श विद्या मंदिर एवं नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों–शिक्षिकाओं को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में 600 शिक्षकों–शिक्षिकाओं को लिया गया है जिसमें 200 मिशनरी, 200 आदर्श विद्या मंदिर एवं 200 नवोदय विद्यालयों के अध्यापक अध्यापिकाओं को लिया गया है।

**शोधविधि :–**

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

**अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–**

**संवेगात्मक परिपक्वता मापनी :–**

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

**अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की गई है।

## समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

### सारणी संख्या – T.IV.1

मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

| शिक्षक | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | .05 | .01 |
| मिशनरी | 100 | 29.72 | 7.69 | 0.57 | सार्थक अन्तर नहीं हैं। | |
| आदर्श विद्या मंदिर | 100 | 30.92 | 6.99 | | | |

**($df=N_1+N_2-2=100+100-2=198$)**

**विश्लेषण :–**

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् मिशनरी एवं आदर्श विद्या मंदिर विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**शैक्षिक उपयोगिता :–**

आज भी शिक्षा की धुरी शिक्षक ही है। केन्द्र में छात्र भले हो पर केवल छात्र ही सबकुछ नहीं, शिक्षक मार्गदर्शक है। यदि वह अपने पद से अलग हो जाए तो छात्र रूपी नाव अज्ञात समुद्र में लहरों के

थपेड़े खाकर डूब सकता है। आवश्यकता है शिक्षक को अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित भाव से कार्य करना चाहिए। कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण एवं प्रेरित होना चाहिए। अपनी क्षमता का पूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए। विद्यालयी परिवेश में मैत्री पूर्ण भाव से समायोजित होना चाहिए।

इस दृष्टि से शोधकर्ता का यह शोध कार्य एक ऐसे दिशा निर्देश से जुड़ा है जो शिक्षक को संवेदनशील, उत्तरदायी, छात्रप्रेमी एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षक के कार्य का मूल्यांकन उसके छात्र होते हैं और शिक्षक और छात्र दोनों के संयोजन से ही शैक्षिक उत्थान संभव है। यह शोधकार्य शिक्षक की पृष्ठभूमि के सार्थक एवं नैतिक पक्ष को भी रेखांकित कर सकेगा, जिससे भविष्य की चुनौतियों का सामना किया जाय, शिक्षक उन छात्रों को तैयार कर सके जो आने वाले भविष्य में उत्तरदायी नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

कुल मिलाकर इस शोधकार्य का निहितार्थ इस दृष्टि से अधिक समझा गया है कि आज शिक्षक क्या केवल धनोपार्जन तक ही सीमित हो गया है। क्या छात्र उसकी सम्पत्ति नहीं है? क्या उसकी क्षमता समाप्त हो गयी है। क्या उस पर प्रशासनिक नियंत्रण नहीं है? इत्यादि प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में इस शोध का निहितार्थ स्पष्ट है।

## हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. अग्रवाल, जे.सी. (2000). *स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास.* नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, पृ.सं. 252
2. अग्रवाल, उमेशचन्द्र. (2004). *सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य कमजोर प्रयास.* नई-दिल्लीः भा.आ.शि., एन.सी.ई.आर.टी., नई-दिल्लीः पृ.सं. 9
3. टलतेकर, अनन्त सदाशिव (1968). *प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति.* वाराणसीः नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स. पृ.सं. 155
4. चौहान, एस.एस. (1998)- *उच्च शिक्षा मनोविज्ञान विकास.* नई दिल्लीः पब्लिशिंग पृ.सं. 31
5. ढोढियाल, एस. पाठक (1990). *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या-51
6. कपिल, एच के. (1979½- *अनुसंधान विधियाँ.* आगराः द्वितीय संस्करण. हरिप्रसाद भार्गव हाऊस. पृष्ठ संख्या-23
7. कोठारी, सी.आर. (2008½- *अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी.* आगराः न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन. पृष्ठ संख्या-2
8. खान, ए.आर. (2005½- *जीवन कौशल शिक्षा.* अजमेरः राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. पृष्ठ संख्या-14
9. गुप्त, नत्थूलाल (2000). *मूल्य परक शिक्षा और समाज.* नई दिल्लीः नमन प्रकाशन. पेज-122

10. गौड़, अनिता ¼2005½- *बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे*. नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स. पृष्ठ संख्या–14